परमेश्वर की भूमिकाएं दर्शाते नाम

अपने लोगों के जीवनों में प्रभु की भूमिका के कारण पुराने नियम में उसे कई पदनाम दिए गए हैं। इस पाठ में हम उन नामों में से कुछ के बारे में जानेंगे और समझेंगे कि हमें परमेश्वर को कैसे देखना चाहिए।

''न्यायी''

उत्पत्ति 18:25 में अपना पक्ष रखते हुए, इब्राहीम ने परमेश्वर को *शोफेट* अर्थात ''न्यायी'' कहकर पुकारा था। इब्राहीम को लगा कि सदोम और अमोरा में किसी धर्मी का वहां के दुष्ट लोगों की तरह नाश नहीं होना चाहिए। इसलिए, उसने परमेश्वर के पास इस आधार पर दया करने की बिनती की कि *शोफेट* अर्थात न्यायी सारी पृथ्वी का सही काम ही करेगा।

इस विशेष घटना में, जो बात एक धर्मी मनुष्य को सही लगी थी, वही बात परमेश्वर की नज़रों में भी सही थी। परन्तु कई बार लोग उन बातों के लिए जो उन्हें अन्यायपूर्ण लगती हैं परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं। परमेश्वर के लिए अन्यायी होना असम्भव है, क्योंकि उसका स्वभाव ही धर्म है। उसकी ''आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि वह बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता'' (हबक्कूक 1:13); ''वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है'' (व्यवस्थाविवरण 32:4); उसके ''सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है'' (भजन संहिता 89:14)।

परमेश्वर के इतने सारे नियमों के सही होने के प्रगटावे (देखिए लैव्यव्यवस्था 19:18; व्यवस्थाविवरण 4:8; 23:24, 25; 24:10–22) से हमें विश्वास हो जाना चाहिए कि वह जो भी निर्णय लेता है, उसका अवश्य ही कोई न कोई कारण होता है। हम विश्वास कर सकते हैं कि उसने शाऊल के सात पुत्रों को बचाने के लिए (2 शमूएल 21:3, 5, 6); कुकर्म से जन्मे हुए अर्थात अमोनियों तथा मोआबियों को निकालने के लिए (व्यवस्थाविवरण 23:2–6); बीमारी तथा तूफ़ान लाकर अन्य जातियों के बच्चों का विनाश करके सही किया था (1 शमूएल 15)। मानवीय तर्क परमेश्वर के दिमाग की बातों को समझने के लिए अपर्याप्त हैं; इब्राहीम जैसा विश्वास रखने के लिए कई बार केवल एक ही व्यावहारिक समाधान होता है कि *शोफेट* अर्थात सारी पृथ्वी का न्यायी, ठीक ही करेगा।

परमेश्वर का चरित्र हमें आश्वस्त करता है कि वह प्रत्येक अन्याय का अन्त कर देगा। आम तौर पर, अपनी अथाह बुद्धि से, कई बार वह इस जीवन में सुधार नहीं करता है, हाबील और नाबोत इसके प्रमाण हैं (देखिए उत्पत्ति 4:8; 1 राजा 21:1–16)। कई बार सुधारों की प्रतीक्षा अगली दुनिया तक की जाती है, जैसे धनी आदमी और लाज़र इसकी पुष्टि करते हैं। परन्तु, कई बार परमेश्वर सभी बातों को सुधार देता है। इस कारण, सभोपदेशक 5:8 को याद रखिए: ''यदि तू किसी प्रांत में निर्धनों पर अंधेर और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखे, तो इससे चकित न होना; क्योंकि एक अधिकारी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातों की सुधि रहती है, और उनसे भी और अधिक बड़े रहते हैं।''

''चरवाहा''

उत्पत्ति 49:24 में ईश्वर की पुन:आश्वस्त करने वाली विशेष परिभाषा *रोएह* अर्थात ''चरवाहा'' है। याकूब ने यह आश्वासन देते हुए कि परमेश्वर, अर्थात *रोएह* अर्थात चरवाहा उसकी सम्भाल करेगा, यूसुफ के मन में एक सुखद विचार डाला था। दाऊद ने भी प्रभु को *रोएह यिसराएल* अर्थात इस्राएल के चरवाहे के रूप में देखा जिसने ''यूसुफ की अगुआई भेड़ों की'' तरह की थी (भजन 80:1)। उसने परमेश्वर के सब लोगों को ''उसकी चराई की भेड़ों'' के रूप में देखा (भजन 100:3) और अपने आपको उस भेड़ के रूप में जो अपने *रोएह* अर्थात अपने चरवाहे में व्यक्तिगत रुचि रखती थी (भजन 23)।

यहेजकेल के दिनों में नबी, याजक और राजा जिन्हें प्रभु के प्रतिनिधियों के रूप में इस्राएल के चरवाहे ठहराया गया था, भरोसे के योग्य न रहे थे। ''हाय इस्राएल के चरवाहों पर जो अपने-अपने पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को भेड़-बकरियों का पेट न भरना चाहिए?'' (यहेजकेल 34:2)। चरवाहों द्वारा उचित चरवाही न किए जाने के कारण झुण्ड ''तितर-बितर'' हो गया था और ''न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूंढ़ता था'' (यहेजकेल 34:6)। फिर महान *रोएह* अर्थात स्वर्गीय चरवाहे ने ठान लिया, ''देखो, मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों सी सुधि लूंगा, और उन्हें ढूंढूंगा'' (यहेजकेल 34:11)।

यह दाऊद के पुत्र यीशु मसीह में पता चलता है कि परमेश्वर ने अपने वचन को कैसे पूरा किया। परमेश्वर ने कहा ''और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उनको चराएगा, और वही उनका चरवाहा होगा'' (यहेजकेल 34:23)। भविष्यवाणी के ''दाऊद'' अर्थात यीशु ने परमेश्वर के पिछले चरवाहों की तरह भाड़े का चरवाहा नहीं कहलाना था। अच्छे चरवाहे की तरह, उसने भेड़ों के लिए अपनी जान भी दे देनी थी (यूहन्ना 10:11)। वह मारा गया था (जकर्याह 13:7; मत्ती 26:31), परन्तु परमेश्वर ''हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया'' (इब्रानियों 13:20)। उस वाचा के द्वारा, बेशक हम ''भेड़ों की तरह इधर-उधर भटक रहे थे,'' ''पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए'' (1 पतरस 2:25) हैं। हम चाहे यहूदी हों या अन्यजाति वह महान चरवाहा अपने पास आने वाले सब लोगों को बड़े प्रेम से

सम्भालता है जिसका परिणाम यह होता है कि एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा बन जाता है (यूहन्ना 10:16)।

जैसे पुराने नियम में, परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने प्रतिनिधि बनाकर अधीन चरवाहों के रूप में चुना था; वैसे ही, आज कलीसियाओं के प्राचीनों को चरवाहे कहा जाता है (1 पतरस 5:1, 2)। प्राचीनों को परमेश्वर के झुण्ड की रखवाली करने का काम सौंपा जाता है (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:1-4)। जैसे पुराने नियम में चरवाहों को महान *रोएह* के पास हिसाब देना पड़ता था, वैसे ही प्रभु की भेड़ों के पासबान प्रधान चरवाहे को हिसाब देंगे (1 पतरस 5:4)।

एक दिन प्रधान चरवाहा स्वयं प्रकट होगा:

> देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ आ रहा है,
> वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा;
> देखो, जो मज़दूरी देने की है वह उसके पास है
> और जो बदला देने का है वह उसके हाथ में है।
> वह चरवाहे की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा,
> वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए रहेगा
> और दूध पिलाने वालियों को धीरे-धीरे ले चलेगा
> (यशायाह 40:10, 11)।

"राजा"

यशायाह ने प्रभु को *मेलेक* अर्थात "राजा" के रूप में ऊंचे पर महिमा पाए हुए; उसके कारवां को, उसकी महिमा से भरे मन्दिर में, सिंहासन पर बैठा हुआ देखा था। "यहोवा अनन्तकाल के लिए महाराज है" (भजन संहिता 10:16क)। उसकी प्रभुता सदा के लिए है: "देखो, जातियां तो डोल की एक बून्द वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरीं" (यशायाह 40:15क)। जब "जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान था" (भजन संहिता 29:10क), तो उसका निर्णय सुनिश्चित था। अकेला वही परमेश्वर है।

"युग-युग के राजा" (प्रकाशितवाक्य 15:3) को यह अच्छा लगा कि मसीही युग के दौरान आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार अपने पुत्र को दे (मत्ती 28:18)। पीलातुस के प्रश्न कि "तो क्या तू राजा है ?" (यूहन्ना 18:37क), का यीशु ने स्पष्ट उत्तर दिया था: "मैंने इसलिए जन्म लिया, और इसलिए जगत में आया हूं" (यूहन्ना 18:37ख)। परन्तु, उसने उस हाकिम को यह स्पष्ट कर दिया कि उसका राज्य इस जगत का नहीं है (यूहन्ना 18:36)। जब शैतान ने उसे जगत के सारे राज्यों और उनकी महिमा देने की पेशकश की तो यीशु ने सांसारिक अधिकार लेने से इन्कार कर दिया (मत्ती 4:8, 9)। उसने अपने अनुयायियों को उसे राजा बनाने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया (यूहन्ना 6:15)। जब यरूशलेम में गधे के बच्चे पर सवार होने के समय उसके राजा होने की घोषणा हो रही थी, तो उसके पास कोई सिपाही नहीं था; किसी को भी यह नहीं लगा था कि कैसर का विरोधी आ गया है

(यूहन्ना 12:15)। वास्तव में उस समय यीशु अभी राजा नहीं था अर्थात उसने स्वर्ग में वापस जाने तक राजा नहीं होना था। फिर भी उसने स्वेच्छा से अपनी स्तुति करने वाले लोगों की बात मान ली जिनके मनों पर वह पहले ही राज कर रहा है।

आज्ञा मानना सीखकर (इब्रानियों 5:8) और मृत्यु पर विजय पाकर (इब्रानियों 2:14) वह ऊंचे पर चढ़ गया। यीशु के स्वर्ग में ऊपर पहुंचने पर वहां की गलियों में बड़ा आनन्द मनाया जाने लगा। फाटकों तथा दरवाजों से यह शोर आ रहा था:

> हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो
> हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ
> क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!
> (भजन संहिता 24:7)

जब स्वर्ग के फाटकों और द्वारों ने पूछा, ''वह प्रतापी राजा कौन है ?'' तो उत्तर मिला ''परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है'' (भजन 24:8) और ''सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है'' (भजन 24:10)।

उसका वास्तविक राज्याभिषेक स्वर्गारोहण के दस दिन बाद हुआ था; जिसे पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था। परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को यह कहते हुए बुलाया, ''कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं'' (भजन संहिता 110:1)। अब अन्तिम शत्रु के नाश होने तक परमेश्वर के स्थान पर वह राज करेगा (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)। सांकेतिक तौर पर कहें, तो परमेश्वर ने पिन्तेकुस्त के रविवार अपने पुत्र के सिर पर अभिषेक का तेल उंडेला (इब्रानियों 1:8, 9), जो सम्भवत: मई 26, सन 30 ई. था। यीशु सचमुच ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु'' (1 तीमुथियुस 6:15) बन चुका था।

यद्यपि यीशु अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा था, परन्तु उसका राज्य सांसारिक (पृथ्वी का) और शारीरिक नहीं होना था। उसका सिंहासन ''दया के साथ'' स्थापित किया गया था और इस पर बैठने वाले को ''सोच विचारकर सच्चा न्याय'' करना था और धर्म के काम पर तत्पर रहना था (यशायाह 16:5)। उसका राज्य ''धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है'' (रोमियों 14:17, 18क)।

जब वह सब लोगों को मुर्दों में से जिलाएगा, तो अन्तिम शत्रु अर्थात मृत्यु का नाश हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:26)। उस समय वह राज्य को अपने पिता के हाथ सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। फिर स्वयं भी, सब लोगों और स्वर्गदूतों के साथ, वह उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया था, ताकि परमेश्वर सब में सब कुछ हो (1 कुरिन्थियों 15:28)।

''छुड़ाने वाला''

मनुष्य के साथ परमेश्वर को व्यवहार की भूमिका को दर्शाता एक और शब्द है *गोएल,*

जो किसी बदला लेने वाले, निर्दोष ठहराने वाले या छुड़ाने वाले की ओर संकेत करता है। इस शब्द का इस्तेमाल सुलैमान ने नीतिवचन 23:10, 11 और अय्यूब की पुस्तक 19:25–27 में किया था।

निर्दोष ठहराने वाला

गोएल के रूप में परमेश्वर इस्राएल का बदला लेने वाला या उसे निर्दोष ठहराने वाला था। उसके अनुसार सीमा रेखाओं को बढ़ाकर भूमि चुराना एक गम्भीर अपराध था। उसकी नज़रों में अनाथों के अधिकारों का अतिक्रमण करना भी गम्भीर अपराध था (नीतिवचन 23:10)। अपराध करने वालों को *गोएल* अर्थात एक छुटकारा देने वाले की आवश्यकता होती थी। सुलैमान ने इसे परमेश्वर की एक भूमिका के रूप में देखा। उसने परमेश्वर का वर्णन ‘‘सामर्थी’’ के रूप में किया और कहा कि ‘‘उनका मुकदमा वही लड़ेगा’’ (नीतिवचन 23:11)।

अय्यूब के कष्ट के समय कोई भी, यहां तक कि उसकी पत्नी भी उसके चरित्र को निर्दोष नहीं ठहरा रही थी, परन्तु वह जानता था कि उसका एक मित्र है:

> मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिए करूंगा, और न कोई दूसरा। ... (अय्यूब 19:25–27)।

उसे यह तो पता नहीं था कि मरने से पहले परमेश्वर उसके चरित्र को निर्दोष ठहराएगा या नहीं। इस जीवन में निर्दोष ठहरने की उसे कोई उम्मीद नहीं थी। वह केवल मरकर और दुख से छुटकारा पाना चाहता था। परन्तु, उसे जीवित और निर्दोष ठहराने वाले पर पूर्ण विश्वास था जिसने उसे धूल में से अविनाशी आंखों से परमेश्वर को देखने के लिए जिला देना था।

दाम चुकाने वाला

कई बार *गोएल* शब्द का विशेष अर्थ एक दाम चुकाने वाले के रूप में किया जाता है। किसी इस्राएली को अपनी भूमि बेचने के लिए विवश किए जाने पर उसके सबसे निकटतम सम्बन्धी को मूसा की व्यवस्था के अनुसार उस भूमि को खरीदने का विशेष अधिकार होता था (लैव्यव्यवस्था 25:23–25)। ऐसे निकटतम सम्बन्धी को *गोएल* अर्थात दाम चुकाने वाला कहा जाता था। रूत की पुस्तक में एक दिलचस्प उदाहरण दिया गया है। जब नाओमी के रिश्ते में सबसे नजदीकी व्यक्ति ने छुटकारे के अधिकार से इन्कार कर दिया, तो बोअज़ उसका *गोएल* अर्थात छुड़ाने वाला बन गया। उसने न केवल वह भूमि ही खरीदी, बल्कि उस सौदे में एक दुल्हन भी मिल गई।

परमेश्वर भी बाबुल की दासता में रहने वालों का *गोएल* अर्थात छुड़ाने वाला अर्थात

दाम चुकाने वाला था। वह उन्हें एक नये मन और नई आत्मा देकर जरुब्बाबेल, एज्रा और नहेमायाह की अगुआई में वापस लाया था (यहेजकेल 36:26)। इस्राएल का *गोएल* सामर्थी था, उसने लोगों का मुकदमा भली भांति लड़ना था (यिर्मयाह 50:34)। उनके मार्ग को पवित्रता का मार्ग कहा जाना था। अशुद्ध लोगों ने वहां से नहीं गुज़रना था; अर्थात यह मार्ग उन लोगों के लिए था जिनका दाम चुकाया गया था। उनके मन और आत्मा नए होने थे, पवित्रता का मार्ग उनके लिए साफ़ होना था। पर्यटकों को, यहां तक कि सीधे लोगों को भी, समझ होनी थी कि धार्मिकता के राजमार्ग पर कैसे चलना है। परमेश्वर के दाम चुकाए हुए लोगों को गाते हुए सिय्योन लौट जाना था। उनके मन में सदा-सदा का आनन्द होना था; उन्हें आनन्द और प्रसन्नता मिलनी थी जबकि दुख और उदासी दूर हो जानी थी (यशायाह 35:8-10)। परमेश्वर, जिसने इस्राएल को बनाया था, अब उनके *गोएल* के रूप में एक और श्रेष्ठता की घोषणा कर सकता था: "मैंने तुझे छुड़ा लिया है" (यशायाह 43:1)।

पाप से मुक्ति किसी विदेशी शक्ति के हाथों से छुटकारे से बढ़कर है (कुलुस्सियों 1:14)। परमेश्वर ने अपना छुटकारा यीशु के द्वारा उपलब्ध करवाया, जिसने अपने आपको हमारे छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया (मत्ती 20:28)। उसने अपना "बहुमूल्य लोहू" (1 पतरस 1:19) "पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए" (इब्रानियों 9:15) के लिए ही नहीं, बल्कि "सारे जगत के पापों" (1 यूहन्ना 2:2) के लिए भी दिया। इस प्रकार, *गोएल* अर्थात छुड़ाने वाले के रूप में यीशु ने "अनन्त छुटकारा" उपलब्ध करवा दिया ताकि जो उसके आज्ञाकार हों वे "प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें" (इब्रानियों 9:12, 15)।

"पिता"

पहले ही यह बताया जा चुका है कि परमेश्वर कोई वास्तविक पिता नहीं है। परन्तु, हमारे पिता के रूप में उसकी भूमिका पुराने नियम में अति सराहनीय और आनन्दित करने वाली है।[1]

इस्राएल परमेश्वर के पहलौठे के रूप में

पिता के रूप में परमेश्वर का पहला सांकेतिक चित्रण इस्राएल के बारह गोत्रों के हवाले से किया जाता है जिन्हें सामूहिक रूप से एक इकाई अर्थात एक पुत्र के रूप में माना जाता है। "इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है" (निर्गमन 4:22)। फिरौन द्वारा इस्राएल को जिसे परमेश्वर के पहलौठे के रूप में दिखाया गया था, मिसर छोड़ने की अनुमति देने से इन्कार करने पर, प्रभु ने उसे बताया, "इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे को घात करूंगा" (निर्गमन 4:23)। जब परमेश्वर का पुत्र इस्राएल गुलामी की घोर पीड़ा सह रहा था, तो उस राष्ट्र के प्रति परमेश्वर का मोह एक पिता की तरह व्यक्त किया गया: "जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिसर से बुलाया"

(होशे 11:1)। अपने पुत्र में दिलचस्पी लेने और उससे प्रेम रखने वाले पिता की तरह, प्रभु ने इस्राएल को अपनी गोद में लेकर (होशे 11:3) उसे चलना सिखाया।

मसीही लोग परमेश्वर के पहलौठे के रूप में

इस्राएल के अतिरिक्त दूसरी जातियां भी परमेश्वर की संतान थीं। सभी जातियां "परमेश्वर का वंश" थीं (प्रेरितों 17:29)। परन्तु, इब्राहीम के असाधारण विश्वास के कारण इब्रानी जाति को जो उसका वंश थी, प्रभु द्वारा अपने सारे बच्चों (जातियों) में से पहलौठा पुत्र माना जाता था।

किसी परिवार में पहलौठा होना विशेष सम्मान की बात मानी जाती थी। पहलौठे को न केवल अपने पिता की सम्पत्ति का दोगुना भाग ही मिलता था (व्यवस्थाविवरण 21:17), बल्कि, पहलौठा होने के कारण उसे अपने पिता की सामर्थ का मूल भी माना जाता था। पहलौठे को अपने पिता की "सामर्थ" के रूप में आदर दिया जाता था, और उसे सम्मान तथा शक्ति में पहल दी जाती थी (देखिए उत्पत्ति 49:3)। इसलिए, पहलौठे पुत्र को परिवार की शान समझा जाता था।

अपने बच्चों को सम्मान देने की इच्छा से, परमेश्वर ने इस्राएल को सब जातियों में प्राथमिकता दी। वैसे ही, प्रभु मसीही लोगों को सम्मान देने और कलीसिया को अपने पहलौठे लोग कहकर आनन्दित था (इब्रानियों 12:23), जिनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। इस चित्रण में सब लोगों को सृष्टि के आधार पर परमेश्वर की संतान माना गया है परन्तु, नई सृष्टि बनने पर (2 कुरिन्थियों 5:17), मसीही लोगों को परमेश्वर के पहलौठे माना जाता है, जिनसे वह प्रसन्न है।

परमेश्वर की संतान बनना

कोई भी उदाहरण सम्पूर्ण नहीं हो सकता। यद्यपि पिता/पुत्र का उदाहरण बहुत उपयुक्त है, परन्तु पसन्द के मामले में इसमें त्रुटि है। एक बच्चा यह नहीं कह सकता है कि वह जन्म लेना चाहता है या नहीं, परन्तु आत्मिक जन्म लेने वाले व्यक्ति को यह चुनना पड़ता है कि उसने पिता के परिवार में नये सिरे से जन्म लेना है या नहीं (यूहन्ना 3:3-8)।

परिवार का सदस्य बनने के लिए प्राकृतिक जन्म एक सामान्य ढंग है, परन्तु गोद लेने से भी परिवार का सदस्य बना जा सकता है। लोगों को परमेश्वर द्वारा परिवार में गोद लिए जाने का सांकेतिक चित्र पवित्र शास्त्र में भी लागू होता है (गलतियों 4:4-7)।

व्यक्तिगत दिलचस्पी

एक ऐसे पिता की कल्पना नहीं की जा सकती है जो आवश्यकताओं को तो पूरा करता हो परन्तु अपने बच्चों में व्यक्तिगत रुचि न लेता हो।[2] एक अच्छा पिता अपने बच्चों का विशेष ध्यान रखता है। पवित्र शास्त्र जब परमेश्वर की तुलना एक पिता से करता है, तो विशेष पूर्व प्रबन्ध को शामिल किया जाना आवश्यक है। एक निकम्मा सांसारिक पिता

अपने बच्चों को रोटी और मछली के स्थान पर पत्थर और सांप देने की नहीं सोचता। फिर भी यह तो केवल उस स्वर्गीय पिता की एक छोटी सी नकल है, जिसका मन अपने बच्चों की आवश्यकताओं से, पिघल जाता है। उनके दुखी होने पर वह दुखी होता है (यशायाह 63:9)। ''जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है'' (भजन संहिता 103:13, 14)।

बड़ा भाई

पवित्र शास्त्र यीशु को उदाहरण के रूप में सभी मसीहियों का बड़ा भाई ठहराता है। वह उन्हें भाई कहने से लज्जाता नहीं (इब्रानियों 2:11)। बहुतों में पहलौठा होने के कारण (रोमियों 8:29) अपने छोटे भाइयों तथा बहनों के लिए बोलने में उसे प्रसन्नता होती है। उनकी ओर से वह पिता से बात करता है (1 यूहन्ना 2:1)।

बच्चों का चाल-चलन

जैसे बच्चा अपने पिता के गुणों पर जाता है। वैसे ही, परमेश्वर की संतान अपने कामों में अपने पिता की तरह सम्पूर्ण तथा परिपक्व होना चाहती है। प्रिय बालक होने के कारण (इफिसियों 5:1; मत्ती 5:48), वे परमेश्वर की नकल करने की कोशिश करते हैं। सर्वशक्तिमान प्रभु के पुत्र तथा पुत्रियां होने के कारण, वे शरीर तथा आत्मा की सारी मलिनता से शुद्ध होना चाहते हैं (2 कुरिन्थियों 7:1)। एक योग्य पुत्र ''अपने पिता का आदर करता है'' (मलाकी 1:6), और यदि उसके पिता को दुख पहुंचे तो सही सोच वाला पुत्र दुखी होता है (इफिसियों 4:30)।

दूसरे बच्चे

माता-पिता का उदाहरण न केवल माता-पिता और बच्चे के सीधे सम्बन्ध को ही दर्शाता है बल्कि बच्चों के एक दूसरे के साथ सीधे सम्बन्ध को भी दिखाता है। ''एक ही पिता'' (मलाकी 2:10) के बच्चों में एक दूसरे से धोखा करने की बात अविचारणीय है। परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करने वाला व्यक्ति यदि परमेश्वर के बच्चों से प्रेम नहीं करता है तो वह झूठा है (1 यूहन्ना 4:20)। जो पिता से प्रेम करता है, वह पिता के दूसरे बच्चों से भी प्रेम करेगा (1 यूहन्ना 5:1)।

''पति''

मनुष्य के साथ सम्बन्ध में परमेश्वर ने जिस सबसे घनिष्ट और व्यक्तिगत उदाहरण का इस्तेमाल किया है वह *Ish (ईश)* अर्थात ''पति'' का है। पति और पत्नी में एकता और साथ-साथ चलना इतना आवश्यक, लाभदायक और आनन्ददायक है कि *Ish* 'ishshah अर्थात पति/पत्नी को सबसे प्रिय उदाहरण बना देता है।

इस्राएल

मंगेतर के रूप में इस्राएल। इस्राएल की तुलना उस स्त्री से की जाती है जिसने ''अपनी जवानी के दिनों में'' (होशे 2:15) प्रभु से प्रेम किया था और विवाह का उसका प्रस्ताव भी स्वीकार किया था (यिर्मयाह 2:2)। वह उसके पीछे उस जंगल में चलने को तैयार था जहां भूमि जोती बोई न गई थी (यिर्मयाह 2:2)।

वेश्या के रूप में इस्राएल। गंभीरता और भरोसे योग्य प्रेम से आरम्भ हुआ विवाह कष्टदायक हो गया था। पत्नी ने एक बार नहीं, बल्कि कई बार, बहुत से प्रेमियों के साथ ''व्यभिचार किया'' (यिर्मयाह 3:1)। परमेश्वर का कहना था कि ''इसमें तो संदेह नहीं कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है वैसे ही हे इस्राएल के घराने तू मुझ से फिर गया है'' (यिर्मयाह 3:20)। इस्राएल की मूर्तिपूजा, इसकी अपवित्र नैतिकताएं और उसकी सारी बेईमानी को परमेश्वर–अपने *'Ish* (ईश) अर्थात अपने पति के विरुद्ध व्यभिचार माना गया था। प्रभु का ऐलान था कि विवाह के बन्धन में ''यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली'' (यिर्मयाह 31:32)। परमेश्वर से दूर होकर लोगों ने ''वेश्या का सा'' काम किया था (होशे 1:2)।

प्रभु का कहना था कि इस्राएल ''नथ और हार पहने अपने यारों के पीछे जाती और मुझको भूले रहती थी'' (होशे 2:13)। उसने ''पराये पुरुषों को अपने पति की सन्ती ग्रहण'' (यहेजकेल 16:32) करके ऐसे काम किए ''जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम हैं'' (यहेजकेल 16:30)। हे इस्राएल, ''तू'' केवल इस बात में अलग है (यहेजकेल 16:34) कि किसी से दाम लेने के बजाय ''तूने अपने सब मित्रों को स्वयं रुपये देकर और उनको लालच दिखाकर बुलाया है'' (यहेजकेल 16:33)। इस्राएल एक ऐसी स्त्री की तरह बन गया ''जो अपने पति और लड़के बालों से घृणा करती थी'' (यहेजकेल 16:45) और व्यभिचार करती थी (यहेजकेल 16:38)।

इस्राएल सुधरा। यद्यपि व्यवस्था के अनुसार एक पति को किसी दूसरे पुरुष की पत्नी बन जाने वाली अविश्वासी स्त्री को दोबारा अपनाने की मनाही थी (व्यवस्थाविवरण 24:1–4), परन्तु इस्राएल के पति ने बिनती की ''...मेरे पास लौट आ'' (यिर्मयाह 3:1; KJV)। उसने निवेदन किया कि ''लौट आ...,'' ''क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं'' (यिर्मयाह 3:14क)। इस्राएल का पति अर्थात परमेश्वर अभी भी अपनी अविश्वासी पत्नी से प्रेम करता था। उसने उसके दिल से बात की (होशे 2:14) और एक नया प्रस्ताव रखा ''जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात मिसर देश से चले आने के समय कहती थी'' (होशे 2:15)। इस नये विवाह का आधार अधिक मज़बूत है:

> और मैं सदा के लिए तुम्हें अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा,
> और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करुणा,
> और दया के साथ करूंगा।
> और यह सच्चाई के साथ की जाएगी,

और तू यहोवा को जान लेगी
(होशे 2:19, 20)।

''उस समय तू मुझे ईशी [अर्थात हे मेरे पति] कहेगी'' (होशे 2:16)।

मन को छू लेने वाला उदाहरण। होशे की पुस्तक की अति सम्भावित व्याख्या यह है कि परमेश्वर (जिसका प्रतिनिधित्व होशे करता है) एक छल खाया हुआ पति था जिसे उसके मन के अयोग्य पत्नी (जिसका प्रतिनिधित्व गोमेर करती है) थी। यदि यह व्याख्या सही है, तो होशे ने आरम्भ में एक निष्कलंक पत्नी से विवाह किया था, जैसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ। धीरे-धीरे, इस्राएल की तरह, गोमेर अविश्वासी बन गई, यहां तक कि उसने वेश्यापन में ही बच्चों को जन्म दिया था। इतना व्यभिचारपूर्ण व्यवहार होने के बावजूद होशे अपनी प्रिय गोमेर के लौटने पर फिर से उसे अपनाने को तैयार था। अधिकांश पति अपनी पत्नी से इतना प्रेम नहीं करते जितना होशे ने किया। व्यवस्था के आधार पर, वह गोमेर को तलाक दे सकता था या उस पर पथराव कर सकता था (देखिए व्यवस्थाविवरण 22:22; 24:1) परन्तु इसके बजाय, उसने उसे प्रिय बनाने की बातें कीं।

गोमेर ने होशे की बिनती मान ली और उसके पास लौट आई; परन्तु वह दूसरी बार फिर अन्य प्रेमियों की खोज करती हुई भटक गई। होशे 3:2 में हम देखते हैं कि गोमेर में प्रेमियों को आकर्षित करने की योग्यता धीमी पड़ गई थी; निराशा में उसने भोजन और रहने के स्थान के लिए अपने आपको एक दास के रूप में बेच दिया। होशे ने, जो अभी भी बेवफा गोमेर से प्रेम करता था, उसे गुलामी से निकालने के लिए खरीदने की इच्छा की। उसके पास केवल आधा धन अर्थात चांदी के पन्द्रह शेकेल थे (देखिए निर्गमन 21:32); परन्तु उसके पास होमेर और आधे जौ थे, जो उसके चांदी के साथ मिलकर गोमेर को स्वतन्त्र कराने के लिए काफी थे। होशे जिसने बेवफ़ा गोमेर से सच्चा और पक्का प्रेम किया था, अविश्वासी इस्राएल के साथ परमेश्वर के गहरे और सच्चे प्रेम का चित्रण है।

कलीसिया

जिस प्रकार पुराने नियम में इस्राएल के प्रभु के साथ विवाहित होने को दर्शाया गया है, वैसे ही नये नियम में कलीसिया को बताया गया है। मसीह को अथाह और मजबूत प्रेम करने वाले के रूप में दिखाया गया है जो अपनी दुल्हन अर्थात तेजोमय कलीसिया को दाग और धब्बे के बिना खरीदने के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है।

नये नियम में पति के रूप में मसीह के दो पहलू मिलते हैं। एक में वह प्रेम याचना करने वाला प्रेमी है और दूसरे में पापी बपतिस्मा लेने के समय उसका प्रस्ताव स्वीकार करता है (प्रकाशितवाक्य 19:7-9)। इस उदाहरण के अनुसार, बपतिस्मा यीशु के प्रस्ताव को स्वीकार करना और विवाह के लिए मंगनी की एक निशानी है। सम्पूर्ण मसीही जीवन ही धार्मिकता में रहकर विवाह के दिन के लिए तैयारी करना है जब मेम्ने का विवाह आने पर उसकी मंगेतर अपने आपको तैयार पाएगी। फिर, विवाह के बाद, वे स्वर्ग में सदा आनन्द

से रहेंगे।

पति के रूप में मसीह के दूसरे उदाहरण में, बपतिस्मे के समय एक पापी का विवाह यीशु से हो जाता है (इफिसियों 5:22–32; रोमियों 7:4)। फिर उस मसीही का काम बेदाग़ और निष्कलंक होकर एक अच्छी पत्नी के रूप में जीवन बिताना होता है।

ईश अर्थात ''पति'' के रूप में परमेश्वर का उदाहरण निश्चय ही बाइबल में सबसे अधिक उत्साहित करने वाला है जिसे, पवित्र आत्मा ने पुराने और नये दोनों नियमों में डाला है।

''उद्धारकर्त्ता''

बाबुल में निर्वासित, उदास और निराश यहूदी यशायाह की पत्री पढ़कर कितने रोमांचित हुए होंगे कि परमेश्वर उनका *Moshia' (मोशिया)* अर्थात उनका उद्धारकर्त्ता होगा! परमेश्वर ने अपने लोगों को दासता से छुड़ाने और उन्हें उनके अपने देश में बहाल करने की प्रतिज्ञा की थी। यशायाह 43:3–7 में कहा गया है:

> क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं,
> इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्त्ता हूं।
> ....
> पुत्रों को दूर से
> और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ।
> हर एक को जो मेरा कहलाता है,
> जिसको मैंने अपनी महिमा के लिए सृजा,
> जिसको मैं ने रचा और बनाया है।

परमेश्वर पिता ने, जो स्वर्ग की सभी योजनाओं में यीशु के साथ था, यीशु के द्वारा बाबुल में यहूदियों में *मोशिया* के रूप में अपना काम किया था। यीशु कहलाने से बहुत पहले यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह ''याकूब के गोत्रों को उठाएगा'' और ''इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले'' आएगा (यशायाह 49:6)। यीशु ने भविष्यवाणी को पूरा किया जब ''फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा ... इसलिए उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया'' (एज्रा 1:1) जिससे यहूदियों को अपने देश लौटने की अनुमति मिल गई थी।

परमेश्वर ने *मोशिया* के रूप में यीशु के द्वारा केवल यहूदियों को विदेशी दासत्व से ही नहीं बचाया बल्कि उससे भी बढ़कर एक आत्मिक मार्ग की भविष्यवाणी की: उसने अन्यजातियों को पाप के अंधेरे से बचाना था। परमेश्वर ने यीशु से कहा, ''मैं तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए'' (यशायाह 49:6)। इस अद्भुत योजना को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने मरियम से जन्म लेकर मनुष्य का रूप धारण किया था। उसके मिशन की भविष्यवाणी के अनुसार उसका

नाम यीशु अर्थात उद्धारकर्त्ता था, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाने आया था।

देह में परमेश्वर अर्थात मसीह में परमेश्वर बाबुल में पूरे हुए पिछले एक मिशन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण मिशन के लिए बैतलहम में आया था। *मोशिया* के रूप में परमेश्वर, हां यीशु के रूप में वह पाप भरे दोष के बन्धन से लोगों को बचाने के लिए आया था। ईश्वरीय योजना और भविष्यवाणी के अनुसार, उद्धारकर्त्ता के रूप में परमेश्वर का काम यहूदियों से आगे निकल जाना था। उसके लिए सीमा में रहना "हल्की सी बात" होनी थी (यशायाह 49:6) और परमेश्वर के प्रेम की लम्बाई और चौड़ाई और गहराई और ऊंचाई की व्यापकता से बहुत कम होनी थी। सचमुच, कुरनेलियुस के घराने से आरम्भ करके, जाति-जाति के लोग उद्धार के आनन्द का जश्न मनाते हुए "[उसका] धर्म और सब राजा [उसकी] महिमा देखेंगे" (यशायाह 62:2)।

परिणाम यह है कि *मोशिया,* यीशु अर्थात उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर एक शिखर पर पहुंच चुका है। मसीह के नाम पर हर एक घुटने को झुकना चाहिए और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ को अंगीकार कर लेना चाहिए कि यीशु ही प्रभु है (देखिए फिलिप्पियों 2:10, 11)।

सारांश

परमेश्वर अपने लोगों की ओर से काम करता है। वह उनका न्यायी, उनका चरवाहा और उनका राजा है। छुटकारा दिलाने वाले और पिता के रूप में उसकी भूमिकाओं में उनके लिए उसकी चिन्ता और सम्भाल स्पष्ट दिखाई देती है। आज्ञा मानने वालों के लिए उसका सम्बन्ध इतना व्यक्तिगत है जैसा एक आदमी का अपनी पत्नी के साथ हो; इस कारण परमेश्वर का अपने अनुयायियों के पति के रूप में चित्रण किया जाता है। फिर, वह उनका उद्धारकर्त्ता है जो उन्हें संकटों से निकालता है।

परमेश्वर के साथ रोज चलने में, हमें चाहिए कि हम उसे अपनी अगुआई करने वाले, सम्भाल करने वाले, और लगातार हम पर निगरानी करने वाले के रूप में देखें। एकमात्र सच्चा परमेश्वर हमारी हर आवश्यकता को पूरा कर सकता है।

पाद टिप्पणियां

[1]यह आरोप कि नये नियम के पिता/परमेश्वर पुराने नियम के यहोवा/परमेश्वर में बहुत बड़ा सुधार है, भजन संहिता 68:5; 89:26; 103:13, 14; नीतिवचन 3:12; यशायाह 43:6; 63:16; 64:8; यिर्मयाह 31:9; और होशे 1:10 सहित पुराने नियम की बहुत सी आयतों को नज़रअन्दाज करता है। [2]हमारे लिए उपलब्ध कराने के लिए परमेश्वर की इच्छा पर अतिरिक्त अध्ययन के लिए इस पुस्तक के पृष्ठ 23 से 26 देखिए।

‘‘दास’’

पदनाम *एबेद* अर्थात ‘‘दास’’ का इस्तेमाल सबसे पहले परमेश्वर ने इस्राएल के लिए किया। इस जाति के लोग परमेश्वर के लोग थे, इब्राहीम की तरह विश्वास करते थे, जिन्हें संसार में मसीह को लाने के लिए चुना गया था। परमेश्वर की दृष्टि में इस्राएल, अर्थात उसका *एबेद* अनमोल और प्रतिष्ठित था (यशायाह 43:4); फिर भी इस दास ने बहरा और अंधा होकर, परमेश्वर को निराश किया (यशायाह 42:19)। लोगों ने अपना बल व्यर्थ (यशायाह 49:4) और पाप करने में गंवा दिया (यशायाह 44:21, 22)। उन्हें कीड़ा कहा जाने लगा (यशायाह 41:14)।

इस कारण परमेश्वर ने एक नये *एबेद* (यशायाह 42:1) को चुना, जिससे उसका जी प्रसन्न हुआ था। दास के रूप में उसका काम दूसरे *एबेद* अर्थात इस्राएल को छुड़ाना और उसके पाप उठाना था। इस *एबेद* ने इस्राएल की सहायता करने तक ही सीमित नहीं होना था अर्थात इसने अन्यजातियों तक भी परमेश्वर की धार्मिकता (यशायाह 49:1) और पृथ्वी के सिरे तक उद्धार ले जाना था (यशायाह 49:6)। इस सिद्ध *एबेद* ने कभी असफल या निराश न होकर, बुद्धिमत्ता से काम करना था (यशायाह 42:4; 52:13)। उसने पाप का बोझ अपने ऊपर लेना था (यशायाह 53:5, 6)।

यह आदर्श *एबेद* स्वर्ग में रहता था और परमेश्वर के स्वभाव वाला था अर्थात वह परमेश्वर था (यूहन्ना 1:1)। परन्तु, परमेश्वर का *एबेद* बनकर, उसने अपनी स्वर्गीय स्थिरता पकड़े नहीं रखी, बल्कि अपने आपको दास के रूप में बहुत ही छोटा कर दिया (फिलिप्पियों 2:6, 7)। पृथ्वी पर वह दासों में सबसे छोटा बन गया, जो सेवा करवाने नहीं बल्कि सेवा करने के लिए आया था (मत्ती 20:25-28)। हमारा वह *एबेद* न केवल रूप में ही, बल्कि मन से भी बना। उसे गंदे पांव धोने के लिए दीन या छोटा नहीं किया गया था; परन्तु वह नीच, तुच्छ से तुच्छ सेवा पाप उठाने वाले के रूप में उसकी सेवा से कहीं छोटी थी। क्रूस से लटककर उसकी देह इकट्ठी हो गई थी, परन्तु उसकी आत्मा उसके शरीर से अधिक शक्तिशाली थी। सच्ची सेवा के सार के रूप में, बे-झिझक, ‘‘पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी’’ (इब्रानियों 5:8, 9)।

क्रूस पर, उसके पिता ने यीशु के प्राण का कष्ट देखा, जो मृत्यु के कारण शोकित था। परमेश्वर ने कहा कि संसार के पापों का दाम चुकाने के लिए ऐसा ही कष्ट पर्याप्त था। परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया और दासों में उस सबसे छोटे दास को, वह नाम देकर जो सब नामों से ऊपर है, स्वर्ग में महिमा के सिंहासन पर ऊंचा किया। हमारा *एबेद* यीशु परमेश्वर का और सब मनुष्यों का सेवक बनकर पृथ्वी पर आया था, परन्तु अन्त में उसे संसार में सबसे बड़ा स्थान दिया गया था। सेवा करके वह बड़ा बना।